10

कहानी निर्वाचन का शैक्षिक महत्व

तनुजा मेलकानी*
शुभ्रा पी. काण्डपाल**

बालमन बहुत कोमल होता है। जिस प्रकार का वातावरण बच्चों को मिलता है, बच्चे के बालमन पर उसका वैसा ही प्रभाव पड़ता है। आज के युग में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और दूरसंचार तकनीकी ने बच्चे को अकेलेपन की तरफ धकेला है। आज बच्चों के समूचे व्यक्तित्व के विकास के लिए दादा-दादी तथा नाना-नानी के स्नेह के साथ ही उनके द्वारा कही गई कहानियों के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। कहानी सुनना और कहना बच्चों के मानसिक विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम माना जा सकता है। कहानी बच्चों को आनंदित करती है तथा इसके सुनने के दौरान बच्चों में अनेक कौशलों का विकास भी होता है। उक्त आलेख में कहानी कथन से संबंधित प्रायः सभी पक्षों को छूने का प्रयास है। ।

महात्मा गाँधी के अनुसार, "शिक्षा से मेरा तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जो बालक के शरीर, मन एवं आत्मा के सर्वोत्तम रूपों का प्रस्फुटन कर दें।" (ओड़, 2016) अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति में निहित क्षमताओं के सर्वांगीण विकास से है। जब बच्चा बचपन से योग्य शिक्षक तथा संस्कारी माता-पिता के सानिध्य में रहता है तो अंततः वह एक पूर्ण व संतुलित व्यक्तित्व के रूप में परिलक्षित होता है। अतः आवश्यक है कि बच्चे को आरंभ से ही आत्माभिव्यक्ति के अवसर दिए जाने चाहिए। आत्माभिव्यक्ति की अनेक विधियों में अनेक सृजनात्मक उपायों तथा शिक्षण विधियों का सहारा लेना पड़ता है, यथा संगीत, नृत्य, कला, नाटक, कहानी इत्यादि। इसमें छोटे बच्चों हेतु कहानी कथन की प्रविधि को अत्यधिक प्रभावी माना गया है।

बच्चों को कहानी कहना एवं सुनाना हमारी भारतीय संस्कृति की एक समृद्ध परंपरा रही है। किसी भी आयु स्तर के बच्चों को कहानी सुनना प्रिय लगता है। कहानी द्वारा बच्चों में विभिन्न सामाजिक घटनाओं के प्रति कौतूहल एवं जिज्ञासा का भाव पैदा होता है। बच्चों के जीवन में कहानियों का बड़ा महत्व होता है। कहानी मनोरंजन का साधन होने के साथ-साथ सामाजिक आदर्शों की स्थापना एवं मूल्यों को विकसित करने में सहायक होती है।

गिजुभाई बधेका के अनुसार "कहानी बालकों के विचारों, आदर्शों, दृष्टि-बिंदु, अच्छी भली बुद्धि, सद्-असद् विवेक को जाग्रत करती है। कहानी बच्चों

*असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, बी. एड. विभाग, एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी, ज़िला— नैनीताल (उत्तराखण्ड)
**एसोसिएट प्रोफ़ेसर, बी. एड. विभाग एम.बी. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हल्द्वानी, ज़िला— नैनीताल, (उत्तराखण्ड)

© NCERT not to be republished

के दृष्टिकोण को विशाल बनाती है, कल्पना-शक्ति को तीव्र करती है, सौंदर्य परखने की सही शक्ति देती है, भावनाएँ सूक्ष्म और गहन बनाती हैं, विनोद को सजीव करती है और कुल मिलाकर संक्षेप में कहें तो बालकों के जीवन में प्राणों का सिंचन करती हैं।"

भारत में 'पंचतंत्र', 'हितोपदेश', 'जातक कथाएँ', 'अकबर-बीरबल', 'बेताल-पच्चीसी', 'सिंहासन बत्तीसी', 'कथा सरितसागर', 'लोक कथाएँ', पौराणिक और ऐतिहासिक कथानकों पर आधारित कहानियाँ हैं, जो आज भी जनमानस एवं बालमन पर अमिट प्रभाव छोड़ती हैं।

कहानी कहने के उद्देश्य

कहानी भाषा शिक्षण के उद्देश्यों— सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना इन चार कौशलों की प्राप्ति में भी सहायता करती है। कहानी आनंद प्राप्ति की स्वाभाविक खुराक होती है। कहानी कहने का कोई न कोई उद्देश्य अवश्य होता है जब तक कहानी कहने वाले व्यक्ति के मन में कहानी कहने का उद्देश्य स्पष्ट नहीं होगा, तब तक वह कहानी के चुनाव, उसकी कथावस्तु की क्रमबद्धता से पूर्णता परिचित नहीं हो सकेगा। अतः कहानी-शिक्षक के समक्ष कहानी कथन का उद्देश्य स्पष्ट होना चाहिए, इससे उसके भटकने की गुंजाइश नहीं रहेगी व बच्चे कहानी कथन द्वारा पूरी तरह से लाभान्वित हो सकेंगे। इस रूप में एक कहानी-शिक्षक के समक्ष कहानी सुनाने के अग्रलिखित उद्देश्य होते हैं।

ज्ञानात्मक उद्देश्य

1. विद्यार्थियों को शब्द, सूक्ति, लोकोक्ति एवं मुहावरों का ज्ञान कराना।
2. कहानी लेखन की विभिन्न शैलियों से परिचित कराना।
3. पौराणिक कथाओं, ऐतिहासिक घटनाओं, सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों, धार्मिक विश्वासों से परिचित कराना।

भावात्मक उद्देश्य

1. संवेगों को प्रशिक्षित करना।
2. कल्पनाशक्ति एवं सूझ-बूझ विकसित करना।
3. बच्चों को भाव प्रकाशन के अधिकाधिक अवसर देना।

कौशलात्मक उद्देश्य

1. बच्चों में पूर्ण मनोयोग से सुनने और सुनकर अर्थ ग्रहण करने की कला में निपुण बनाना।
2. बच्चों में कहानी लेखन के प्रति रुचि विकसित करना।
3. स्मरणशक्ति का प्रशिक्षण।

शिक्षक द्वारा कहानी चयन

बच्चों को कैसी कहानियाँ सुनायी जाएँ, यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रश्न है? क्योंकि कहानी बालमन पर गहरा प्रभाव डालती है। अतः शिक्षक द्वारा कहानी का चयन सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए। कहानी का चयन करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है—

1. कहानी की कथावस्तु सरल, सहज एवं बच्चों के स्तरानुकूल हो।
2. कहानी रुचिकर एवं गतिशील हो।
3. कहानी बाल मनोविज्ञान के अनुरूप हो।
4. कहानी आस-पास के परिवेश पर आधारित हो, जिसे बच्चे सहज रूप से आत्मसात कर सकें।

© NCERT not to be republished

5. कहानी मनोरंजक होने के साथ-साथ जीवनोपयोगी भी हो।
6. कहानी ऐसी हो जिसे एक ही बैठक में अधिक से अधिक एक आध घंटे में मनोयोग के साथ पढ़ा जा सके।
7. कहानी ऐसी हो जिसके माध्यम से बच्चों को समाज एवं राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास, सभ्यता तथा संस्कृति से परिचित कराया जा सकें।
8. शिक्षक द्वारा हास्य विनोद, मनोरंजक, प्रेरणादायी एवं शिक्षाप्रद कहानियों का चुनाव किया जाना चाहिए।
9. कहानी चयन के संदर्भ में शिक्षाशास्त्री एवं बाल मनोवैज्ञानिक डॉ. मरिया मॉन्टेसरी का कहना था कि, बालकों को डरावनी, भयानक, भूत-प्रेतों की या जिन कहानियों का अंत दुःखपूर्ण हो, का चयन नहीं किया जाना चाहिए।

शिक्षाशास्त्री गिजुभाई बधेका का कहना है कि कहानी सुनाना एक प्रकार की मानसिक खुराक है। प्रत्येक कहानी का चयन करते समय हमें अपने आप से निम्न तीन सवाल पूछ लेने ज़रूरी हैं—

1. क्या कहानी बच्चों को आनंद देगी?
2. क्या कहानी भाषा की दृष्टि से योग्य है?
3. क्या कहानी हितकारी है? अर्थात कहानी सुनने से बालक के जीवन को निर्दोष एवं स्वस्थ मार्ग मिलेगा?

इन तीनों कसौटियों पर जो खरी उतरें, उन कहानियों को ही यदि चुना जाएगा तो कहानियों के चयन में किसी भी तरह की त्रुटि से उबरा जा सकेगा।

कहानी-शिक्षक के गुण

जहाँ तक कहानी का प्रश्न है, यह एक कला है, अतः प्रत्येक शिक्षक से यह आशा नहीं की जा सकती कि वह कहानी कथन में निपुण हो। कहानी-शिक्षक के लिए यह अनिवार्य है कि वह स्वयं कहानी कहने में रुचि रखता हो। उसका विभिन्न कहानियों पर एकाधिकार हो, वह बाल-मनोविज्ञान से परिचित हो। कहानी-शिक्षक के अंदर विनोदप्रियता एवं स्वाभाविकता का पुट हो, उसकी वाणी में स्पष्टता होनी चाहिए, उसकी आवाज़ में भावानुसार हर्ष, शोक आदि सभी भाव ध्वनित होने चाहिए। वह बच्चों के प्रति स्नेहपूर्ण एवं सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिए। तभी वह आत्मीय संबंध विकसित कर कहानी कला के उद्देश्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकेगा।

कहानी का निर्वाचन

कहानी का निर्वाचन करते हुए शिक्षक के लिए यह आवश्यक है कि वह कहानी रटकर नहीं बल्कि समझकर स्वाभाविक रूप से कहे, अन्यथा उसके कहानी निर्वाचन में स्वाभाविकता एवं प्रवाहमयता नहीं आ पाएगी। शिक्षक को कहानी कहने से पूर्व ही उसकी भूमिका बाँध लेनी चाहिए। शिक्षक को सरल प्रस्तावना प्रश्नों की मदद से कहानी के विषय पर आने का प्रयास करना चाहिए, जिससे बच्चे कहानी सुनने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो सकें। शिक्षक द्वारा कहानी सुनाने की जगह का चुनाव भी पूर्व में कर लेना चाहिए, ऐसी जगह का चुनाव करना चाहिए जो शांतिपूर्ण हो। नीचे ज़मीन पर गोलाकार रूप में बैठकर कहानी का निर्वाचन ज़्यादा स्वाभाविकता लाता है।

© NCERT not to be republished

शिक्षक द्वारा सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। शिक्षक द्वारा कहानी में रोचकता लाने के लिए कहानी का विकास चित्रों की सहायता से भी किया जा सकता है। कहानी का प्रभाव ऐसा हो कि बच्चे कल्पना के संसार में पहुँच जाएँ, वे इतने आनंदित हो जाएँ कि उन्हें अपनी उपस्थिति का भी भान न रहे।

कहानी के अंत में बच्चों से कहानी से संबंधित छोटे-छोटे प्रश्न भी शिक्षक द्वारा पूछे जा सकते हैं, जैसे—

1. कहानी के किस पात्र ने आपको सबसे ज़्यादा प्रभावित किया और क्यों?
2. कहानी में सबसे महत्वपूर्ण घटना क्या थी?
3. कहानी में सबसे अच्छी बात आपको क्या लगी और क्यों?
4. अगर आप कहानी के पात्र की जगह होते तो क्या करते?
5. कहानी में और क्या बदलाव हो सकता था?
6. आप के अनुसार कहानी का अंत कैसा होना चाहिए?
7. क्या कहानी का कोई दूसरा अंत भी संभव था?
8. कहानी से आपको क्या कोई सीख मिली?

कहानी के अंत में बाल-जिज्ञासा वाले प्रश्नों को समाहित किया जाना चाहिए, इससे बच्चों को संवाद के अधिकाधिक अवसर प्राप्त होते हैं और कक्षा के प्रत्येक बच्चे की भागीदारी कहानी के मूल उद्देश्य की प्राप्ति में सहायक होती है।

एक शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण है कि वह विभिन्न विषयों के शिक्षण को उसे सरल एवं रोचक बनाने के लिए कहानी कला का प्रयोग कर सकता है। इस रूप में कहानी शिक्षण का एक प्रबल एवं महत्वपूर्ण साधन है, जिसे वे शिक्षण कार्य में सफलतापूर्वक काम में ला सकते हैं। आज विद्यालयों में कहानी के शैक्षिक महत्त्व को स्वीकार करने एवं प्रोत्साहित करने की नितांत आवश्यकता है। एक शिक्षक के लिए कहानी कथन के निम्नलिखित शैक्षिक मूल्य हो सकते हैं।

कहानी निर्वाचन का शैक्षिक महत्व

शिक्षक के लिए कहानी कथन के निम्नलिखित शैक्षिक मूल्य हो सकते हैं—

1. कहानी के द्वारा जटिल एवं गूढ़ विषयों को भी रोचकता के साथ पढ़ाया जा सकता है।
2. कहानी जीवन के महत्वपूर्ण पक्षों को रोचक रूप में प्रस्तुत करती है।
3. कहानी बच्चों की तर्क-चिंतन, निरीक्षण, कल्पना तथा निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाती है।
4. कहानी बच्चों में समस्या समाधान एवं सूझ-बूझ विकसित करती है।
5. कहानी मनोरंजन प्रदान करने के साथ शिक्षक और विद्याथियों के मध्य अंतर्वैयक्तिक संबंध विकसित करती है, जो अध्ययन-अध्यापन की दृष्टि से महत्वपूर्ण होता है।
6. कहानी बच्चों के भाषायी ज्ञान को समृद्ध करने में सहायक होती है, यह बच्चों को मौखिक अभिव्यक्ति में कुशल बनाती है।
7. पाठ्य-विषय को रोचक बनाने के लिए कहानी का उपयोग करना अधिक स्वभाविक और मनोवैज्ञानिक माना गया है।

© NCERT not to be republished

8. कहानी बच्चों को अमूर्त चिंतन के अधिकाधिक अवसर देती है।
9. कहानी बच्चों को अधिक संवेदनशील बनाती है जो बच्चों के नैतिक विकास में सहायक सिद्ध होता है।
10. कहानी के माध्यम से बच्चों का किताबों की दुनिया से जुड़ने का अवसर प्राप्त होता है जो उनके भाषायी विकास में सहायक होता है।

कहानी के शैक्षिक महत्व को शिक्षाविदों एवं बाल-साहित्कारों द्वारा समय-समय पर स्वीकारा गया है। बावजूद इसके कहानी के महत्व को आज भी अनदेखा किया जाता रहा है, विद्यालयों में परीक्षा एवं मूल्यांकन पद्धति जहाँ बच्चों की सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता को कम आँकती है, वहीं दूसरी ओर विद्यालयों में शिक्षकों के ऊपर पाठ्यक्रम पूर्ण करने का दवाब बना रहता है जिसके परिणामस्वरूप शिक्षक को कहानी निर्वाचन के अवसर कम ही मिल पाते हैं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के अनुसार भारत में बच्चे के स्कूली जीवन को उसके घर, आस-पास के परिवेश से जोड़ना ज़रूरी है। हर बच्चे की अपनी क्षमताएँ और कौशल होते हैं, इसे विद्यालयी जीवन में व्यक्त करने का अवसर विभिन्न साहित्यिक गतिविधियों, जैसे— कला, नाटक, कहानियों, संगीत आदि के माध्यम से दिया जाना चाहिए।

आज कहानी कला को प्रोत्साहित करने की ज़रूरत है। कहानी परिवारों में परंपरागत रूप से जिस प्रकार से सुनाई जाती रही है, बच्चों को आज वह पारिवारिक परिवेश उपलब्ध नहीं है। संयुक्त परिवारों के विघटन ने भी दादा-दादी, नाना-नानी द्वारा कहानी कहने की परंपरा को आघात पहुँचाया। आधुनिक जीवन शैली एवं संचार के साधनों के चलते बच्चे अपना अधिकांश समय टेलीविजन, सोशल मीडिया पर बिताते हुए देखे जा सकते हैं, परिणामस्वरूप बच्चों में कल्पनाशीलता एवं रचनात्मकता कम होती जा रही है। बच्चे वास्तविक दुनिया के बजाय आभासी दुनियाँ में अधिक विचरण कर रहे हैं, जो उन्हें अधिक आक्रामक बना रहा है। अतः आज बच्चों को अच्छे साहित्य और कहानियों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किए जाने की महती आवश्यकता है।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

ओड़, लक्ष्मीबाई के. 2016. *शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि*. राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी. जयपुर.

चतुर्वेदी, शिखा. 2008. *हिंदी शिक्षण*. आर. लाल बुक डिपो. मेरठ.

चौहान, रीता. 2008. *हिंदी शिक्षण*. अग्रवाल पब्लिकेशन. आगरा.

डैनीसन जॉर्ज. 1996. *बच्चों का जीवन*. पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा (अनुवादक). ग्रंथ शिल्पी. नयी दिल्ली.

दूबे, अभय कुमार. 2013. *समाज विज्ञान विश्वकोश*, भाग 2. राजकमल प्रकाशन. नयी दिल्ली.

बधेका, गिजुभाई. 2003. *कथा कहानी का शास्त्र*. अंकित पब्लिकेशन. जयपुर.

बिहारी, लालरमण. *हिंदी शिक्षण*. आर.लाल बुक डिपो. मेरठ.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. शांति के लिए शिक्षा.* राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार (आधार पत्र). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्. नयी दिल्ली.

सिल्विया एश्टन, वार्नर. 1996. *अध्यापक*. पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा (अनुवादक). ग्रंथ शिल्पी. नयी दिल्ली.

not to be republished